मधुबन ओम् शान्ति अंक 291 अक्टूबर 2016

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(14-9-16)

प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा के अति लाडले, सदा साइलेन्स की शक्ति द्वारा सेकण्ड में तीनों लोकों का सैर करने वाले, समय और संकल्प के खजाने की एकॉनामी करने वाले सभी निमित्त सेवाधारी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

मीठे प्यारे बापदादा ने समय प्रमाण विश्व में चारों ओर शान्ति की किरणें फैलाने, शान्ति की अनुभूति करने और कराने का विशेष इशारा दिया है। बाबा कहते बच्चे अब अपने हर सेवास्थान को ''शान्ति कुण्ड'' बनाओ। इस शान्ति की शक्ति से रेत में भी हरियाली ला सकते हो। कड़े पहाड़ से भी पानी निकाल सकते हो। तो बोलो, हमारे मीठे भाई बहिनें इस सर्वश्रेष्ठ शक्ति का अनुभव रोज़ कर रहे हो ना!

मैं जब अपनी बात करती हूँ, तो मुझे लगता है कि इस साइलेन्स की शक्ति से बाबा की जो सकाश मिल रही है, वह मुझे चला रही है। सुबह से लेकर रात तक बाबा मुझे और कोई संकल्प चलने नहीं देता है। बाबा कहता है बच्ची वेट एण्ड सी। मेरे अन्दर आप सबके प्रति भी यही भावना है कि आप सब ऐसे न्यारे बनो जो बाबा के प्यार की सकाश करेन्ट का काम करती रहे, जिससे अशरीरी होना सहज हो जाये। वैसे भी वैराग्य के बिना त्याग नहीं होता और त्याग है तो तपस्या है। त्याग माना कोई में भी लगाव न हो। अगर किसी के साथ भी लगाव, झुकाव या टकराव है तो योग लगेगा नहीं, इसलिए पहले इन तीनों से फ्री हो जाओ। हरेक से प्रेम हो, सच्चाई हो, सहयोग हो पर लगाव न हो, यह चेकिंग करनी है। दिन भर में भले सेवा इन कर्मेन्द्रियों द्वारा होती रहे पर अन्दर की तात लात हो न्यारा और प्रभु का प्यारा बनने की।

अभी प्रेजेन्ट समय बाबा वाचा की सेवा के लिए इतना नहीं कहता है क्योंकि आवाज़ से तो सामने वाले सुनेंगे, पर मन्सा सेवा से कहाँ भी हजारों माइल दूर भी हो तो भी वो सुनेंगे, इसके लिए हम एक के हैं, एक हैं, यह पाठ पक्का हो। भ्रकुटी के बीच में चमकता है अजब सितारा। हरेक को यह फीलिंग हो यह आत्मा जो यहाँ चमकती है, वो विश्व के हर कोने में पहुँच जाती है।

राजयोग से हम राजाई पा रहे हैं, उसके पहले बाबा के दिल का तख्त हमारे लिए है। हमारे दिल में बाबा, बाबा के दिल में हम। बाबा की दिल खोलके देखो वहाँ मैं रहती हूँ! वो बहुत अच्छा स्थान है। दिलाराम के दिल में हम रहते हैं, तो सुख, शान्ति से, धीरज और सच्चाई से बहुत अच्छी सेवा हो रही है। पहले मन को समझाते हैं कि धीरज धर मनुआ, सुख के दिन आयेंगे। मैंने देखा है धीरज का फल बहुत मीठा होता है। अगर थोड़ा भी अधैर्य हुए यानी हरी वरी करी की तो समझो वो लाइफ कोई काम की नहीं है। इसके लिये देह और देह के सब सम्बन्धियों से न्यारा और बाप का प्यारा बनो तो लाइफ एक मिसाल, एक सैम्पल के रूप में दिखाई देगी।

अभी कुछ भी हो जाये तो बाबा हमारा शिक्षक है तो रक्षक भी है। हम शिक्षाओं को जीवन में लायें, ऐसे कभी नहीं कहो कि बाबा अभी तक माया आती है, मैं क्या करूँ? अभी तो माया की छाया भी नहीं चाहिए। भले परीक्षाओं रूपी बादल आ जायें, हम डरने वाले नहीं हैं। डरते वो हैं जो कमजोर होते हैं।

बाकी हमारी मीठी मोहिनी बहन बेहद सेवा निमित्त एडवांस पार्टी में चली गई, हमें भी लण्डन में सब समाचार मिलते रहे। यह भी कितनी भाग्यवान आत्मा रही, जो साकार में मम्मा बाबा और दादी की पालना में पली और सभी दादियों की राइट हैण्ड बन देश विदेश में बहुत अच्छी सेवाओं की छाप डाली। अच्छा -

अभी जल्दी ही आप सबसे मधुबन में सम्मुख मिलना होगा। सबको याद...

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

"पवित्रता का फाउण्डेशन मजबूत बनाओ"

1) संगमयुग पर बापदादा ने सभी बच्चों को पहला व्रत दिया है - ''सम्पूर्ण पवित्र भव''। यह पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं है लेकिन ब्रह्मा बाप समान हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्व हो। हर कर्म में, कर्मयोगी जीवन का अनुभव हो - इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी सो ब्रह्माचरी।

2) पवित्रता ही महानता है, यही योगी जीवन का आधार है। जरा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता के अंश को समाप्त कर सम्पूर्ण स्वच्छ बनो। सदा यही स्मृति रहे कि मैं पूज्य आत्मा इस शरीर रूपी मन्दिर में विराजमान हूँ।

3) ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। **जमा करने की विधि है - मन्सा-वाचा-कर्मणा पवित्रता।** फाउन्डेशन पवित्रता है। सेवा में सफलता का आधार भी पवित्रता है। संकल्प वा बोल में और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता हो।

4) ब्रह्मा बाप और शिव बाप की विशेष पसन्दगी है ही **पवित्रता।** लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। पवित्रता जहाँ होगी वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफाई, ये सब आ जाता है। तो चेक करो सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि हैं? सदा स्वयं से बाप से और परिवार से अन्दर बाहर सच्चे साफ हैं?

5) पवित्रता का रहस्य प्रैक्टिकल में लाना अर्थात् संकल्प रूप से भी पांचों विकारों पर विजयी बनना। व्यर्थ संकल्प क्रोध भी पैदा करता है तो काम अर्थात् किसी आत्मा के प्रति अगर व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी। तो यह व्यर्थ संकल्प बाप के प्यार के पीछे न्योछावर करो।

6) पवित्रता फाउण्डेशन है और फाउण्डेशन का ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना ये कॉमन बात है लेकिन अभी आगे बढ़े हो तो बचपन की स्टेज नहीं है, अभी तो वानप्रस्थ स्थिति में जाना है। मैं ब्रह्मचारी तो रहता हूँ, पवित्रता तो है ही, सिर्फ इसमें खुश नहीं हो जाओ। मूल फाउण्डेशन अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ।

7) बाप के साथ आप सबने भी पान का बीड़ा उठाया है कि पवित्रता द्वारा हम प्रकृति को भी पावन करेंगे। तो ये संकल्प पूरा करने के लिए बापदादा चाहते हैं कि विश्व का हर एक बच्चा पहले लगाव मुक्त बने – चाहे साधनों से, चाहे व्यक्ति से। साधनों को यूज़ करना और चीज़ है, लगाव अलग चीज़ है। जब आत्मा लगाव झुकाव प्रभाव से मुक्त हो तब कहेंगे सम्पूर्ण पवित्र।

8) अगर पवित्रता का नियम पक्का है तो लगाव मुक्त, ईर्ष्या और क्रोध से भी मुक्त बनो। चिड़चिड़ापन भी न हो। यह भी लगाव नहीं रखो कि यह होना ही चाहिए। स्वार्थ या ईर्ष्या के वश कोई बात कहेंगे और वह पूरी नहीं होगी तो क्रोध पैदा होगा इसलिए पवित्रता के पिल्लर को पक्का करो तो यह पिल्लर लाइट हाउस का काम करेगा।

9) सम्पूर्ण सत्यता भी पवित्रता के आधार पर होती है। पवित्रता नहीं तो सदा सत्यता रह नहीं सकती है। सिर्फ काम विकार अपवित्रता नहीं है, लेकिन उसके और भी साथी हैं। तो महान् पवित्र अर्थात् अपवित्रता का नाम-निशान न हो।

10) पवित्रता की शमा सदा श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ जलती रहे, ज़रा भी हलचल में नहीं आये, अचल। जितनी अचल पवित्रता की शमा होगी उतना सहज सभी बाप को पहचान सकेंगे और पवित्रता की जयजयकार होगी। तो चेक करो पवित्रता अचल अडोल है, हिलती या हिलाती तो नहीं है?

11) पवित्रता की पर्सनालिटी को सदा इमर्ज रूप में स्मृति में रखो। स्मृति ही समर्थी का आधार है और जहाँ समर्थी है वहाँ माया आ नहीं सकती। समर्थ आत्मा के पास माया का आना असम्भव है। तो चेक करो कोई भी कमजोर संस्कार अधीन तो नहीं बना देते हैं?

12) पवित्रता की निशानी है - स्वच्छता, सत्यता। अगर सारे दिन में चाहे उठने में, चाहे बैठने में, चाहे बोलने में, चाहे सेवा करने में, चाहे स्थूल सेवा की वा सूक्ष्म सेवा की लेकिन अगर विधिपूर्वक नहीं की, विधि में भी अगर ज़रा-सा अन्तर रह गया तो वो भी स्वच्छता अर्थात् पवित्रता नहीं है। अपवित्रता सिर्फ किसको दु:ख देना या पाप कर्म करना नहीं है लेकिन स्वयं में सत्यता, स्वच्छता विधिपूर्वक अगर अनुभव करते हो तो पवित्र हो।

13) सतगुरू द्वारा जन्मते ही यह महामन्त्र प्राप्त हुआ है कि पवित्र बनो, योगी बनो। यही महामन्त्र सर्व प्राप्तियों की चाबी है।

अगर पवित्रता नहीं, योगी जीवन नहीं तो अधिकारी होते हुए भी अधिकार की अनुभूति नहीं कर सकेंगे। यह महामन्त्र ही सर्व खजानों के अनुभूति की चाबी है।

14) सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा बहुत श्रेष्ठ और सहज है। सम्पूर्ण पवित्रता का अर्थ ही है–स्वप्न-मात्र भी अपवित्रता मन और बुद्धि को टच नहीं करे। इसी को ही कहा जाता है सच्चे वैष्णव।

15) पवित्रता सुख-शान्ति की जननी है। जहाँ पवित्रता है वहाँ दु:ख अशान्ति आ नहीं सकती। तो चेक करो सदा सुख की शैय्या पर आराम से अर्थात् शान्त स्वरुप में विराजमान रहते हैं? अन्दर क्यों, क्या और कैसे की उलझन होती है या इस उलझन से परे सुख स्वरूप स्थिति रहती है?

16) आप आत्मायें ब्राह्मण जीवन में ऐसे पवित्र बनते हो जो शरीर भी, प्रकृति भी पवित्र बना देते हो। इसलिए शरीर भी पवित्र है तो आत्मा भी पवित्र है। सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् अपवित्रता का अंश-मात्र भी न हो क्योंकि जितनी पवित्रता है उतनी ब्राह्मण जीवन की पर्सनैलिटी है। अगर पवित्रता कम तो पर्सनैलिटी कम। ये प्योरिटी की पर्सनैलिटी सेवा में भी सहज सफलता दिलायेगी।

शिवबाबा याद है ? *ओम् शान्ति* 22-4-13 *मधुबन*

"बाबा पॉवरफुल आइना हैं, उसमें स्वयं को देखते रहो तो बदल जायेंगे"

- दादी जानकी

अभी हर एक ऐसे समझे मैं सबसे व्यक्तिगत रूप में बात कर रही हूँ। किसी को पर्सनल बात करना हो तो भले करे पर मेरी भावना यह है, कि हर एक बाबा का बच्चा समान है। हमारी दृष्टि वृत्ति में जरा भी भेद-भाव न हो। ड्रामा अनुसार मुझ आत्मा को बाबा ने इस शरीर में क्यों बिठाया है, वो जानता है, मुझे दिखाता है तू क्यों बैठी हो! हर दिन, हर सेकेण्ड जो बीता, जो कल होगा देखा जायेगा।

जब मैं शब्द कहती हूँ तो उस मैं में जरा भी देह-अभिमान की निशानी न हो। थोड़ा भी देह-अभिमानी की निशानी भिन्न-भिन्न फीलिंग में ले आती है। देही-अभिमानी की फीलिंग ईश्वरीय स्नेह में सम्पन्न बनाती है हमारी देही-अभिमानी स्थिति होगी तो सर्वशक्तिवान बाप को हमें सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाना सहज हो जाता है। सर्वशक्तिवान बाप की शक्ति से हमारे अन्दर कोई भी कमी न हो।

संगम पर बैठे हैं, यात्रा पर हैं, तैयारी नहीं कर रहे हैं। यात्रा पर हैं, आगे जहाँ जा रहे हैं और जो लेके जा रहा है, वही नज़रों में है। स्वच्छता, सच्चाई बाबा की तरफ खैंचके ले जा रही है, यहाँ से उपराम होते जा रहे हैं। यहाँ मेरा कोई काम नहीं है, फीलिंग यह है। कोई पीछे रह न जाये, उसका भी कोई फिक्र नहीं है, पर ऐसी कोई विधि आत्मा को पार करा करके खींच करके लेके चले। उमंग-उत्साह के पंखों से पंछी के समान उड़ाये। तो एक सेकेण्ड में रियलाइज़ करो कि रीयल्टी और रॉयल्टी क्या है?

बाबा जैसी एक्टीविटी और किसी की है ही नहीं। बाबा नॉलेजफुल है, पॉवरफुल है, आलमाइटी अथॉरिटी है तुमको क्या करना है? जैसे बाबा कहते हैं किसी भी प्रकार की चिंता का नाम-निशान नहीं है क्योंकि पता है करनकरावनहार बाबा है। बाबा क्या करता है, वो अनुभव मेरे से कराता है। किसी को भी नचाता है, यह नहीं देखता है कि इसकी आयु बड़ी हुई है, पता भी नहीं है आयु क्या होती है!

मैं कहती हूँ यह बहुत अच्छी आनंद लायक बात है कि मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? सारी लाइफ के अन्दर जब से बाबा की बनी हूँ, पहले भी दुनिया में मोह माया क्या होती है, मुझे पता नहीं था। धन सम्बन्ध में कोई आकर्षण नहीं थी, पर बाप कौन है? मैं कौन हूँ? यह दो शब्दों की बात है, कोई कनफ्यूज़न नहीं है। तो प्लीज मूँझो मत, न आपको देखकर कोई मूँझे, इससे बड़ा पुण्य का खाता जमा होगा, इसके लिए सदा मौज में रहना, चित्त को शान्त रखना। जब तक चित्त शान्त नहीं रहेगा तब तक मन भी शान्त नहीं होगा। चित्त वा बुद्धि में कोई प्रकार की स्मृति नहीं है। तो यह सब बातें इसलिए बता रही हूँ कि जिस किसी को भी कुछ खास परिवर्तन अपने पुरुषार्थ में लाना हो तो आज की घड़ी वो है।

यह रूहानी, ईश्वरीय आकर्षण खींचके मिलन मनाती है, यह मेरा स्वागत नहीं कर रहे हो अपने भाग्य का स्वागत कर रहे हो। इतनी अच्छी बातें हैं, वह तभी अन्दर काम करेंगी, जब देह-अभिमान वाली बातों में जाने का संस्कार न हो।

अच्छी बातों को जो यूज़ करते हैं, वह कभी किसी संस्कार स्वभाव के वश नहीं होते। गीता में भी है कि इसका दोष नहीं है, यह स्वभाव के वश है इसलिए कभी किसी के स्वभाव-संस्कार का वर्णन नहीं करना, नहीं तो वो भी तुम्हारा स्वभाव संस्कार बन जायेगा। किसी के स्वभाव-संस्कार के बारे में सोचना, वर्णन करना यह भी स्वभाव हो जायेगा, इसलिए स्व को सम्भालो। यह हार्ट बड़ा वीक है, एक सेकेण्ड में हर्ट हो जाता है। फिर इसे हील करना मुश्किल है। सबसे नाज़ुक है हार्ट। हर्ट (दर्द) का भी कनेक्शन हार्ट से है।

आज आप सब इतने खुशी में हैं, मैं भी खुश हूँ तो इस प्रकार से खुशी में रहना, खुशी बाँटना भगवान ने भाग्य दिया है। कभी भी न खुश होना माना जो दिया है, वो वापस ले लेगा, चला गया वापस, नहीं आयेगा फिर। अभी समय बहुत नाज़ुक है, जितना भगवान भोलानाथ है, उतना धर्मराज भी है। समर्पण जीवन में ट्रस्टी और विदेही तो समर्पण की खुशियाँ मनाओ क्योंकि ईश्वर को समर्पण हो गये। कोई इन्सान को समर्पण नहीं हुए हैं इसलिए किसी के दबाव या झुकाव में आ नहीं सकते। वन्डरफुल ईश्वर है, हम भी भाग्यशाली हैं, हमको और बातों के लिए सोचने वा बोलने के लिए टाइम ही नहीं है। तभी तो कभी बाबा के सामने जाओ, बाबा के सामने बैठो तो गुम ही जायेंगे। तो बाबा को देखते-देखते बाबा जैसे बनो। इसके लिए हमारे अन्दर कोई भी कमी-कमजोरी को खत्म करने की लगन हो, तो बाबा की दृष्टि से वो कमी कम होते-होते खत्म हो जायेगी। बाबा ने एक मुरली में कहा तुम भी ऐसे टॉवर बन जाओ तो सबका ध्यान जायेगा। तो नॉलेज, लव, प्युरिटी, पॉवर से भरपूर रहो तो टॉवर के मुआफिक खींचता है।

अभी समय थोड़ा है, संकल्प में प्युरिटी, पीस, लव, नॉलेज हो तो समय और श्वाँस सफल हो जायेगा। ऐसे समय में अगर मुझे और कोई की बात याद आयी तो बाबा याद नहीं है। यह बड़ी महीन बात है, भले कोई 50 साल से ज्ञान सुना है, पर अभी ज्ञान बड़ा महीन हो गया है। योग रीयली ऐसा है, जो अब लगता है राजाई संस्कार बन रहे हैं। राजयोग से राजाई संस्कार है। थोड़ा भी घटिया संस्कार न हो। सेवा क्या है, राजाई संस्कार हो। रीयल्टी की राजाई से भासना में रहना, सबके लिए यह जो सेवार्थ भावना, पैदा होना, समर्पण हुए फिर देखते हैं, मन-वाणी-कर्म श्रेष्ठ है तो योगी माना विदेही और ट्रस्टी बन सकता है। जो होने वाला है वो हुआ ही पड़ा है, संगम का समय है कराने वाला बाबा है। बोलो मत। देखो, बाबा को साथी बना करके, साक्षी हो रहने का वरदान मिला हुआ है। बाबा साथी है, मुझे इशारे से चला रहा है। कराने वाला वो है, निमित्त करने वाली मैं हूँ। निमित्त भाव है इसकी गहराई में जाना।

जैसे ब्रह्मा बाबा निमित्त बना तो प्रैक्टिकली मन-वाणी-कर्म से हमारे सामने आइने का रूप धारण किया है। बाबा ऐसा पॉवरफुल आइना है, उसमें देखने से ही हम बदल जाते हैं। इसमें मुख्य बात है जो स्वभाव बनाया हुआ है, उसको चेंज करने की जब तक लगन नहीं है तब तक कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकता है। बाबा चाहता है, बाबा को और कोई इच्छा नहीं है। बाबा कहता है तुम्हारे ऊपर सिर्फ ऊंच पद पाने की जिम्मेवारी है, मैं साथ दूँगा। जो भी सेवा है वो सच्चाई, नम्रता से करेगा तो सेवा में सहयोगी बनेगा, बनायेगा। तुम अगर बाबा को हाँ जी कहते हो, तो बाबा भी तुम्हें सदा हाँ जी कहता है। हाँ जी कहने का बहुत अच्छा सरल नेचर है। यह नेचर सहयोग देने और सहयोग लेने में बहुत अच्छा काम करती है। सार रूप में भावार्थ यह है, कोई कर्मबन्धन नहीं, कोई हिसाब-किताब नहीं, कोई चिंतन नहीं, ऐसा निश्चित रहने का, निश्चित भावी पर अडोल रहने का, बाबा से मिला हुआ वरदान बहुत काम करता है। शान्ति से सुख-शान्ति और प्रेम की दुनिया स्थापन करनी है तो वो कर रहा है। सारी दुनिया में सबको इंतजार है।

दूसरा क्लास

"दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल उनका रहता है जिन्हें पोजीशन और पैसा कुछ नहीं चाहिए"

- दादी जानकी

बाबा कितना बारी मीठे बच्चे, मीठे बच्चे कहता है तो हमें भी बाबा को कितना बारी मीठा बाबा, मीठा बाबा कहना चाहिए! मुरली पढ़ते सुनते लगता है कि बाबा कितनी मेहनत करता है हमको बनाने के लिए, जो कोई देखके कहे तुमको ऐसा किसने बनाया? ऐसा बनाता है और रिटर्न कुछ नहीं कर सकते हैं, बनके दिखाते हैं बाबा को। जो कोई मनुष्य आत्मा नहीं बना

सकता है। वो पतितों को पावन बनाने वाला है और हम कभी पतित बनते हैं, कभी पावन बनते हैं। अभी हमको ऐसा बनाया है जो उनकी हीरे की मूर्ति बनाकर सोमनाथ के मन्दिर में पूंजते हैं।

तो एवरहैपी, एवरहेल्दी रहना हो तो ऐसे अलबेले या लापरवाह नहीं रहना क्योंकि बाबा कहते हैं याद में ऐसे रहो, सब कुछ भूल याद करो। सब कुछ भूल याद करेंगे तो आखिर वो घड़ी आ जाती है नष्टोमोहा...। कहीं भी कोई भी देह-सम्बन्धियों में अथवा अपने विचारों में भी मोह न हो। मोह दु:खदाई है। मोह स्मृति-स्वरूप बनने नहीं देता है। बाबा ने मनमनाभव का वरदान दे दिया फिर बुद्धि को कहता है मध्याजी भव। लक्ष्य को सामने रखो (लक्ष्य सोप है) भले ज्ञान पानी, अमृत मिलता है फिर भी सोप के बिगर सफाई नहीं होगी। भले ज्ञान सुनेंगे सुनायेंगे, अच्छा लगता है, मन शान्त हो जाता है। मनमनाभव होने से अंग अंग शीतल हैं, योगी के अंग शीतल है। शीतल शब्द बहुत अच्छा है, शीतला देवी का पूजन है। कोई भी प्रकार की गर्म नेचर नहीं है, शीतल नेचर है। अपने संग के रंग में हमारे सारे पाप खलास कर दिये हैं तब तो इतने शीतल हैं। तुम्हरी कृपा से सुख घनेरे...।

तो मनन चिंतन में कोई चिंता फिकर नहीं है, चिंतन में ले लो राम, चिंता मेरी तब मिटेगी। कार्य भले करो निश्चिंत रहो ना। पूछताछ काहे को करें, बाबा को कराना है तो ऑटोमेटिकली आज दिन तक आपेही होता आया है। मुझे तो बाबा ने सदा ही फ्री रखा है, जहाँ जैसे रखा है वहाँ हाज़िर रही हूँ तो इसमें बहुत आनंद है। इज़ी राजयोग मेरे लिए है, राजयोग इज़ी तब लगता है जब बाबा से इज़ी हूँ, बाबा जहाँ रखे जो चाहे सो करावे। भक्ति में भी कहते हैं जो हरी की इच्छा। अन्दर से सच्चाई और प्रेम की गंगा बहानी होती है भागीरथ के समान, तो ऐसे आप भी आनंद लो ना। थोड़ा देखो मेरा मस्तक कैसा है! तो बाबा जैसा है! जब तक वह अपने जैसा नहीं बनाता है तब तक छोड़ता नहीं है। भगवान पीछे उसके पड़ेगा जो सच्ची सजनी होगी, सगाई करते ही उसकी याद रहती है, पर शादी के बाद में भूल जाये तो? कोई कर्मबन्धन खींचता हो तो? बाप क्या करेगा! रोज़ मुरली में भागन्ती वालों को याद करता है, इनमें से कोई न जाये। जो गये हैं उसकी बात सुनाता है ताकि यह न जाये। पिताव्रत में सपूत बनना है, सपूत वह जो सबूत देवे। बाबा ने कहा बच्चे ने माना। बच्चा कहे हाँ जी, बाबा कहता मैं तुम्हारे साथ हूँ।

बाबा कहता है भारत को स्वर्ग बनाता हूँ और विश्व की सब आत्माओं से चुन करके उनको अपना साथी बनाता हूँ ताकि सारी विश्व स्वर्ग बन जाये। सिर्फ भारत थोड़ेही बनेगा, आधा कल्प नर्क कैसे बना है, वह तो जानते हैं। पाँच विकारों ने मायावी दुनिया में फंसा करके मजबूर बना दिया, मजदूर बिचारा मजबूर होकर काम करता है। पर अभी बाबा याद दिलाता है, तुम मास्टर हो, मालिक हो ईश्वर को देख खुश हो जाओ, एक एक प्रभु का प्यारा है सबसे न्यारा है तो एक जैसे नहीं हो सकते हैं, यह भेंट करना भूल है परन्तु हर एक न्यारा और बाबा का प्यारा है। पार्ट भी जो कल था वो आज नहीं है, न्यारा है। ड्रामा है ना।

तो चिंतन में ड्रामा और बाबा की नॉलेज ने घर कर लिया है इसलिए मंथन भी वही चलता है। बाबा कैसे इस तन में आता है, क्या करता है? मैंने तो देखा है, आप भी ऐसे अच्छी तरह से देखो, समझो, अनुभव करो तो कभी देह-अभिमान का भूत आता नहीं है। रूहानियत और ईश्वरीय स्नेह में, सच्चाई में कोई डर नहीं है, सबको अच्छा लगता है। हमको तो गले लगाके अपना बनाया है। ऐसे प्यारे बाबा को कितना प्यार करना चाहिए। तो हमारी नज़र ऐसी हो जो मेरी नज़रों में जो होगा वही औरों को दिखाई पड़ता है। तो कर्म बड़े बलवान हैं, बाबा सर्वशक्तिवान है, याद रखो। अमृतवेले से मंथन ऐसे करो जो मक्खन भी मिले छांछ भी मिले। अगर मंथन करना नहीं आता है तो न रहता है मक्खन, न रहता है छांछ। ऐसा मंथन करने वाले सदा शीतल रह करके सर्वशक्तिवान से शक्ति लेकर बाप समान बनने की धुन में रहते हैं।

ज्ञान मार्ग में न कोई पोजीशन चाहिए, न पैसा चाहिए, इससे जो फ्री रहते हैं उनका दिमाग ठण्डा रहता है, स्वभाव सरल रहता है, सहजयोगी हैं। न अधीन हैं, न किसी को अधीन बनाके रखा है। मैं मर जाऊं तो यह कहाँ से खायेगा? बाबा ने प्रैक्टिकल अपना मिसाल दिखाया, अव्यक्त हो करके भी ऐसी हमारी सम्भाल कर रहा है, वन्डरफुल है। किसी को यह फीलिंग नहीं है हमने साकार को नहीं देखा, ऐसी पालना अव्यक्त हो करके कर रहा है। फिर कहता है मैं नहीं करता हूँ, कराने में होशियार है। भगवान किसी का भाग्य बनाने में बहुत होशियार है। एक त्याग से भाग्य बनाया, दूसरा कर्म से भाग्य बन गया।

"पढ़ाई के चारों सबजेक्ट में ध्यान रख सफल होना ही पढ़ाने वाले प्रति रिगार्ड है"

- दादी जानकी

दुनिया में कॉपीराइट करने का हक नहीं होता है, दोष माना जाता है लेकिन यहाँ पर बाबा ने कॉपीराइट करने की छुट्टी दे दी है। भले करो, जैसा करना हो जितना करना हो भले करो। बाबा को ऐसा कॉपी करो जो एज इट इज़ बाप समान बन जाओ। देहधारी को कॉपी करेंगे तो फेल हो जायेंगे। बाबा को कॉपी करना राइट है। मतलब मुझे क्या करने का है... यह बात बुद्धि में अगर है तो बाकी कुछ बात नहीं है। इसमें निश्चय चाहिए, फिर विजय हमारी हुई पड़ी है। कभी भी न अपने में संशय, न किसी में संशय। संशय समय वेस्ट करता है यानि समय जो मुझे साथ देवे ना, वह नहीं देता है। भगवान मेरा साथी है, जिसका साथी स्वयं भगवान क्या करेगा आंधी तूफान...। तो सामने आंधी तूफान हो या पीछे आने वाला हो हमको कोई परवाह नहीं, साथी भगवान है यह ट्रायल करके देखो।

कमजोरी की बातें न चाहते भी यूज़ करते हैं तो यह नुकसानकारक हैं। किसी से भी थोड़ा भी लगाव व्यक्ति से या वैभव से है या अपने कमरे से है तो वो क्या ऊंच पद पायेंगे? तुम्हारा कमरा ऐसा हो जैसे बाबा का कमरा, तो समझें तपस्वीमूर्त है, देख करके ही खुश हो जायें यानि कोई भी प्रकार की कमी को कोई रियलाइज करता है ना, तो वह बिचारी जा सकती है क्योंकि वो समझती है मेरा अन्त आने वाला है। यह जो ब्राह्मणों के संगठन में बैठी है वह ब्राह्मणों को छोड़ेगी नहीं क्योंकि क्या से क्या बन गये यह कोई साधारण बात नहीं है। बाबा ने बकरी समान मैं मैं करने वाली को शेरनी शक्ति बना दिया। तो अन्दर अपने आपको पॉजिटिव पॉवरफुल बनाने की जिसको इच्छा है, बाबा उसे मदद करता है। और जिसे अपनी नेचर को जरा भी चेंज नहीं करना है, तो वो कहेंगे मैं कोशिश करती हूँ कि यह जो नेचर है, थोड़ा चेंज करे ना, तो बहुत ऊंच पद पा सकते हैं। हमारे से भी प्रैक्टिकली स्नेह ले सकते हैं। कोई छोटे बच्चे भी मुस्कराते हुए घड़ी-घड़ी टोली लेने आते हैं। मुस्कराना नहीं आयेगा तो कहेंगे टाइम ही नहीं है, करके बहाना बनायेंगे। सुस्ती, आलस्य, अलबेलापन, बहाना, सूक्ष्म किसी न किसी से ईर्ष्या है तो मुस्कराना नहीं आयेगा इसलिए बाबा कहते मेरी याद में रहो तो पहले वाला जंक उतर जावे और अभी कोई जंक चढ़ न जावे इसलिए परिपक्व याद की ऐसी स्थिति बनाओ और सदा उसको यूज़ करो। थोड़े में खुश नहीं होना चाहिए।

जैसा अन्न वैसा मन असर होता है। बाबा की याद में पकाया हुआ, भोग लगाया हुआ भोजन खाना चाहिए। बाबा का बन करके जिसने यह परहेज रखा है वो बहुत महान है। बाबा देखकर बहुत खुश होता है। और उनकी प्रकृति भी उनको अच्छा साथ देती है। तो जीना हो तो कैसे, मरना है तो कैसे मरो, आओ तो मैं बताऊं इसलिए जो आता है क्लास में सुना देती हूँ, सुनो न सुनो, करो न करो आपकी मर्जी, पर प्रकृति के स्वभाव के वश न रहो। अपने स्वभाव के वश रह करके आओ मेरे से हॅलो करो। क्या है कि सूक्ष्म देह-अभिमान अन्दर से पकड़के बैठा है, छोड़ता नहीं है क्योंकि छोड़ना ही नहीं चाहते हैं ना। स्वभाव के वश में हैं ना। सूक्ष्म संशय है बाबा में, स्वयं में, एक दो में। किसी ने कहा क्या निशानी है जो मायाजीत बनने का मुझे भाग्य मिला है! मैंने कहा विकल्प तो क्या कोई ऐसा व्यर्थ संकल्प भी नहीं आयेगा। जो कोई काम का न हो वो संकल्प आयेगा नहीं। कारणें, अकारणें संकल्प चला तो वाणी में भी आया, कर्म में भी आया और सम्बन्ध में भी आ गया तो फिर रूहानियत कहाँ गयी? पंख टूटे हुए पंछी की तरह हो जाते हैं। आप सारा दिन क्या करते हो, पता नहीं कैसे बिताते हो? किसी को अच्छा रंग लगाया क्योंकि संग का रंग लग जाता है। कई हैं जिनकी जीवन टोली और ब्रह्माभोजन खाने से बनी है।

दिव्य दृष्टि से बाबा को अच्छी तरह से देख लो सब, बाबा की दिल कैसी है? दिलवाला की दिल कैसी है? सबके दिलों को एक सेकेण्ड में समझ करके दिल ले लेता है। मैं भी कोशिश कर रही हूँ टाइम न लगे जैसे बाबा दिल ले लेता है, वैसे दिलाराम से दिल ऐसी ही लग जाये जो दिल खुश हो जाये। अभी प्रैक्टिकली मेरे दिल से पूछो तो सारा दिन रात स्वप्नों में भी यही रहता कि बाबा की दिल कैसी है, ऐसी मेरी दिल बन जाए। जो कोई अपनी बात शब्दों में नहीं सुनाये,

सुनाने के पहले ही उनकी दिल का संकल्प या शुभ भावना पूरी हो जाये। तो ऐसा सिम्पल और सैम्पल बनना माना बाबा की दिल को समझ के ऐसा बनना। दिल का आवाज़ शब्दों में नहीं होता है, सूक्ष्म कैच कर लेते हैं तो फिर शब्दों में आने की जरुरत नहीं है, सहज समझ जाते हैं। अगर ऐसे दिलवाला मन्दिर में रहना है तो बाबा के दिल को समझो। व्यर्थ समय नहीं गँवाओ, यह श्रीमत शिव भगवानुवाच है ब्रह्मा बाबा के द्वारा। आज उसी श्रीमत अनुसार ही चारों सबजेक्ट में ध्यान रखने में सफल हैं तब कहेंगे यह भी पढ़ाने वाले के प्रति रिगार्ड है। ऐसे जो चारों सबजेक्ट में पास होंगे, पास विथ ऑनर में जो आयेंगे, वही अष्ट रत्न होंगे। समय अनुसार पुरुषार्थ ऐसा हो जो सफलता छिम-छिम करके आये। तो कभी क्वेश्चन नहीं उठता है सफलता कब होगी! छिम-छिम करके आ रही है।

24-05-16

"मन को सदा रूहरिहान में वा ज्ञान के विचार सागर मंथन में बिजी रखो तो कन्ट्रोलिंग पावर आ जायेगी" - गुल्जार दादी

अमृतवेले और नुमाशाम के समय बाबा से बातें करने के लिए पर्सनल टाइम मिलता है। भले संगठन में बैठे हैं लेकिन हरेक की रूचि होती है, हर एक अपने अपने अनुसार बाबा से बातें करता है। किसको निराकारी रूप की ज्यादा आती है, किसको आकारी रूप की आती है तो जो चाहिए मतलब अपने आपको उसमें अनुभव करते रहेंगे, यह टाइम हमारा ऐसा है। टाइम को भी व्यर्थ नहीं गंवाना, सफल करना है। वो बाबा बताते ही रहते हैं, बाबा ने विचार सागर मंथन करना भी सिखलाया है, बाबा से बातें करने का टाइम भी अच्छा है। पर्सनल अपनी कोई भी समस्या है तो उसको बाबा को देना और जवाब लेना। ऐसे काफी टाइम हमको बीच-बीच में मिलता है जो हम कर सकते हैं। मतलब फालतू और बातें नहीं सोचो। जो अपने पुरुषार्थ की बातें हैं, उसमें ही रहने का सोचो। कोई भी बात दिल में है या पुरुषार्थ के लिये कुछ शक्ति चाहिए, वो भी बाबा को सुनाकर शक्ति ले सकते हैं, बातें भी कर सकते हैं। यह शाम का टाइम अपने लिए फ्री है, जिस भी रूप से बाबा से मिलो। बाबा से रूहरिहान भी कर सकते हैं। हमारा तो मन का ही पुरुषार्थ है और बाबा ने रूहरूहान की बातें भी बहुत सुनाई हैं। तो अगर अकेले होते हो तो क्या रूहरूहान बाबा से करो या अपने आपसे करो वो भी बाबा ने बतला दिया है। अपने को मतलब बिजी रखो, खाली दिमाग फिर पता नहीं कहाँ कहाँ जाता है। दिमाग कन्ट्रोल में जरूर हो। अपने आप भी अपने को प्रोग्राम देना, यह भी आदत जरूरी है। जब शुरू में बाबा में बाबा आया था, उस समय बाबा ऐसे मस्ती में मस्त रहता था, बातें करने में जो देखते ही लगता था बाबा बहुत डीप बाबा से रूहरिहान कर रहा है। तो आप भी अपने मन को ऐसे बिजी रखो। हमारे टॉपिक्स कितनी निकली हैं, कोई भाषण ही तैयार करो, किसी भी टॉपिक पर लिखो तो उसमें भी कितना टाइम लग जाता है। बिजी हो जायेंगे। एक ही बात सोचो, बस बाबा की महिमा करते रहो, वो भी एक ही बात के ऊपर नहीं सोचना, वैराइटी में मजा आता है। वैराइटी करने में अच्छा है। मतलब मन को कन्ट्रोल में रखों, ऐसे नहीं टाइम चला गया, सोचा नहीं... ऐसे मन में कुछ सोच तो चलता ही है, लेकिन कायदेमुज़ीब नहीं इसलिए अपने मन को कन्ट्रोल में जरूर रखना। यह कन्ट्रोलिंग पॉवर हमको नई नई इन्वेन्शन निकालने में मदद करती है क्योंकि मन को काम तो चाहिए ना, खाली मन भी तो ठीक नहीं है ना! तो भिन्न-भिन्न अनुभव हों। लक्ष्य रखने से फर्क पड़ता है, मन कन्ट्रोल में रहता है। और हमारा योग क्या है? मन को कन्ट्रोल में रखना, जैसे चाहें वैसे चले। तो यहाँ यह टाइम बहुत अच्छा है। बाबा की मुरली इतनी चलती है, तीन पेज चार पेज उस पर ही मनन करो तो भी बहुत अच्छा है। मन बुद्धि को बिजी जरूर रखो, ऐसे नहीं बस बैठे हैं, कुछ न कुछ जरूर चलेगा। तो कन्ट्रोलिंग पॉवर भी हो जो मैं सोचूँ वही चले। जितना समय चाहें उतना समय ही सोचें, मन अपने कन्ट्रोल में हो। पहले ऐसे ग्रुप ग्रुप बनाके करते थे, अभी भी ऐसा करके देखो। मन जो है उसको बिजी रखने का अपने आपका ही प्रोग्राम बनाओ। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

रुहानी प्यार का दीप जलाकर सच्ची दीपावली मनाओ

हम सभी हर वर्ष दीपावली का त्योहार बहुत धूमधाम से मनाते हैं। हम दीवाली पर सबको कहते हैं कि पास्ट का चौपड़ा समाप्त कर अब नया बनाना है। तो हरेक खुद को भी देखे कि हमारा पुराना चौपड़ा समाप्त हुआ है? हरेक अपने चौपड़े का चार्ट निकाले। जो जितनी-जितनी दिव्य धारणा करता, वह स्वयं अपना नाम ऊंचा करता। गुणगान उनका होता जो अपना रिकार्ड अच्छा बनाता, अपने गुणों की, सेवा की छाप, प्यार, प्रेम की छाप डालता। तो हरेक अपनी स्थिति का चार्ट देखे और अपने आपसे पूछे कि क्या हम सेवाओं में रहते, एकमत, एकरस, एक दो के स्नेही होकर रहते हैं जो आज भी अगर यह शरीर छूटे तो पीछे सब उसका गुणगान करें? ऐसे तो नहीं मैं किसी के लिए बोझ हूँ? यह तो किसी के मुख से नहीं निकलेगा कि अच्छा हुआ, बोझ हल्का हुआ। तो अपनी स्थिति ऐसी लवली बनाओ जो हरेक के दिल से मेरी कलाओं का, गुणों का, सेवाओं का विशेषताओं का वर्णन हो। हरेक गुणगान करे। हरेक के दिल से निकले फलानी आत्मा इतनी महान थी। जब हम वाह बाबा, वाह ड्रामा कहते.. तो हम बच्चों की भी सब वाह-वाह करें, ऐसा हरेक का चार्ट होना चाहिए।

बाबा ने हमें ड्रामा की भावी बता दी है, सब देख भी रहे हैं। सब दिन एक बराबर नहीं होते, आज क्या है, कल क्या होगा! बाबा ने इशारा दे दिया है - जो करना है सो आज करो। तो देखना है कि हम समय के पहले रुद्र बाबा पर पूरा-पूरा बलि चढ़ चुके हैं? हमने अपने पुराने संस्कारों की, स्वभावों की बलि चढ़ा दी है? मैं ऐसा कर्म कर रही हूँ जो दूसरा मुझसे प्रेरणा ले? अगर मेरी बुद्धि अनेक तरफ भटकेगी तो जरूर बाबा से बुद्धि ऑफ हो जायेगी। समझो, किसी भी कारण से थोड़ी घड़ी के लिए मैं असन्तुष्ट हुई... तो उस समय हमारे संकल्प कैसे होंगे! क्या बाबा की याद रहेगी! कोई में जिद्द है, फालतू बोलने का संस्कार है.... तो मैं पूछती अगर कल शरीर छूट जाये तो क्या गति होगी! जब हम देख रहे हैं कि सबको उड़ना है तो क्यों न हम अपनी ऐसी श्रेष्ठ स्थिति बनायें।

हमारे स्वर्ग में सदा सूर्य उदय रहेगा, पूर्णिमा का चांद चमकता रहेगा... अंधकार आ नहीं सकता लेकिन वह तब होगा जब संगम पर हमारे हर स्थान पर 24 घण्टा योग का दीवा जलता रहे। योग की ज्योति ऐसी जगाओ जो आने वाला ऐसा अनुभव करे कि यहाँ योग का सूर्य चमक रहा है। सदा योगी जीवन की भासना रहे, योग के वायब्रेशन रहें। इसके लिए निमित्त बनने वालों में ज्ञान और योग का पूरा-पूरा इन्ट्रेस्ट चाहिए।

जितना-जितना हमारा व्यवहार, हमारा खान-पान हमारी अनासक्त वृत्ति, हमारा बोल-चाल योगयुक्त होगा उतना हमारी योगी लाइफ सबको आकर्षित करेगी। हम सब त्यागी और योगी बच्चे हैं, हमारी दिल सब बातों में तृप्त चाहिए। त्याग तपस्या का प्रैक्टिकल पाठ हमें पढ़ना है। हम बाबा के बहुत रॉयल बच्चे हैं। सदा लक्ष्य रहे जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख दूसरे करेंगे। तो हमारा हर कदम, हमारा हर संकल्प, बोल, खान-पान ऐसा हो जो हर घड़ी पदमों की कमाई जमा होती रहे। हमारी चलन ऐसी रॉयल होनी चाहिए जो सबको लगे कि सचमुच यह कोई रूलर है।

इस दीपावली पर हरेक अपने आप से संकल्प करो कि ''अब हम बाबा मीत के साथ आपस में एक दो के मीत बनकर प्यार का दीप जलाकर सदा रखेंगे।'' बीती को बिन्दी लगाए, सबकी विशेषतायें देखते हुए, निर्माण बन सबको सम्मान देते हुए संस्कारों की महारास कर स्नेह का सच्चा सबूत देंगे। अभी बाबा के मिलने के दिन आ रहे हैं तो हरेक बाबा को अपनी यह रिजल्ट दे। एक दूसरे में सूक्ष्म मात्रा में भी मनमुटाव हो, तो उसे मिटाकर अपने को एक स्नेह के सूत्र में बांधो। हरेक आत्मा के अपने-अपने घर में यह दीप जगे तो सचमुच सृष्टि पर स्वर्ग आ जायेगा। जो करेगा सो पायेगा। तो अब ऐसा मीत बनो जो लगे कि सच्ची-सच्ची दीपावली मनाई। अच्छा।